कल्पतरु पुण्यात्मा प्रेम सुधा शवि नाम
कल्पतरु पुण्यात्मा प्रेम सुधा शवि नाम
हतिकारक संजीवनी शवि चंतिन अवरिाम
पतति पावन जैसे मधु शवि रस नाके घोल
भक्ति के हंसा ही चुगे मोंती यह अनमोल
जैसे तनकि सुहागा सोने को चमकाए
शवि सुमरिंसे आत्मा अदबुदथ नखिरी जाये
जैसे चन्दन वृष को दंसते नहीं है नाग
शवि भक्तो के चोले को कभी लगे ना दाग
ॐ नम शवािय (2)

दया नधिि भूतेश्वर शवि है चतुर सुजन
कण कण भीतर है बसे नीलकंठ भगवान्
चंद्रचूड के नेत्र उमापति विश्वेिश
शर्नागैत के यह सदा पके सकल अनेक
शवि द्वारे प्रपंच का छल नहीं सकता खेल
आग और पानी का जैसे होता नहीं है मेल
भयाभंजना नटराज है डमरू वाले नाथ
शवि का वंदन जो करे शवि है उनके साथ
ॐ नम शवािय (2)

लाखो अश्वादमेध हो सो गंगा अस्नान
इनसे उत्तम है कही शवि चरणों का ध्यान
अलख नरिंजन नाथसे उपजे आत्मा ग्यान
भटके को रास्ता मलिे मुशकलि हो आसान
अमर गुणों की खान है चति शुधि शवि ध्यान
सत संगती में बैठके करलो प्रस्च्याताप
लगिेश्वर के मननसे सद्धि हो जाते काज
नमो शवािय रटता जा शवि रखेंगे लाज
ॐ नम शवािय (2)

शवि चरणों को चुन्नेसे तनमन पावन होई
शवि के रूप अनुपकी समता करे ना कोई
महाबली महादेव है महा प्रभु महा काल
असुर नकिंदन भक्त की पीड़ा हरे तत्काल
सर्वयापी शवि भोला धर्म रूप सुख काल
अमरनानता भगवंता जगके पालन हार
शवि करता संसार के शवि श्रृष्टि के मूल
रोम रोम शवि रमने दो शवि ना जैय्यो भूल
ॐ नम शवािय (2)